जलवायु ओवरशूट: तापमान की चोटी और सीमा से ऊपर बिताया समय

सितंबर 2026 | समाचार संदर्भ: 2 सितंबर 2026 | GS-III

जलवायु जोखिम केवल इस बात पर निर्भर नहीं करता कि तापमान कितना बढ़ा। यह भी महत्वपूर्ण है कि ऊँचे तापमान पर दुनिया कितने समय तक रहती है और लोगों की तैयारी कितनी है। सीमा पार करने के बाद तापमान घटाना संभव मान लेना तत्काल कटौती को टालने का आधार नहीं है।

खबरों में क्यों

2 सितंबर 2026 को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम ने Limiting Overshoot रिपोर्ट जारी की। इसके अनुसार कार्रवाई पर्याप्त तेज नहीं रही और दीर्घकालिक वैश्विक तापवृद्धि के 1.5°C से ऊपर जाने की स्थिति का सामना करना होगा। रिपोर्ट का जोर तापवृद्धि की चोटी कम रखने, सीमा से ऊपर रहने का समय घटाने तथा अनुकूलन के साथ तापमान वापस नीचे लाने की संभावना बचाने पर है। यह वापसी सुनिश्चित होने की घोषणा नहीं है।

ओवरशूट का अर्थ क्या है?

यह दीर्घकालिक औसत वैश्विक तापवृद्धि का किसी सीमा से ऊपर जाना और किसी पथ में बाद में उसके नीचे लौटना है। 1.5°C का संदर्भ औद्योगिक-पूर्व स्तर से बहुदशकीय तापवृद्धि है। किसी एक साल या महीने का इससे ऊपर जाना और पेरिस समझौते का दीर्घकालिक ताप-लक्ष्य पार होना समान माप नहीं हैं।

मुख्य तथ्य

चोटी और अवधि दोनों महत्वपूर्ण: जितनी अधिक तापवृद्धि और जितना लंबा समय सीमा के ऊपर, उतना अधिक लोगों तथा प्रकृति पर जोखिम। कम समय का ओवरशूट भी सुरक्षित नहीं है। तापमान घट जाने से हर पारिस्थितिक या सामाजिक क्षति अपने-आप उलट नहीं जाएगी।

कटौती, अनुकूलन और निष्कासन साथ: रिपोर्ट तत्काल गहरी उत्सर्जन-कटौती, मीथेन सहित अल्पजीवी प्रदूषकों पर कार्रवाई, अनुकूलन और आगे चलकर शुद्ध ऋणात्मक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन की चर्चा करती है। कार्बन निष्कासन कटौती का विकल्प नहीं, अतिरिक्त आवश्यकता है।

तकनीकी संभावना, गारंटी नहीं: वायुमंडल से कार्बन हटाकर टिकाऊ भंडारण करने के तरीकों की अपनी भूमि, पानी, ऊर्जा, लागत और सामाजिक सीमाएँ हैं। भविष्य में बड़े पैमाने पर निष्कासन हो जाएगा, इस भरोसे आज उत्सर्जन बढ़ाते रहना रिपोर्ट का संदेश नहीं है।



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

नीति का केंद्र क्या बदले?

अनुकूलन को बाद के लिए न छोड़ें: स्वास्थ्य, पानी, कृषि और शहरों की तैयारी अभी जरूरी है। लगातार बदलते जोखिमों के अनुसार योजनाओं की समीक्षा करनी होगी; पुराना अनुभव भविष्य की पूरी सीमा नहीं बताता।

हर अतिरिक्त तापांश का महत्व: सीमा पार होना प्रयास छोड़ने का कारण नहीं है। छोटी अतिरिक्त वृद्धि रोकना भी गंभीर नुकसान और अपरिवर्तनीय बदलावों का जोखिम घटा सकता है।

न्याय और क्षमता: जो समुदाय कम उत्सर्जन के बावजूद अधिक जोखिम झेलते हैं, उन्हें वित्त, तकनीक और निर्णय में हिस्सेदारी चाहिए। अधिक ऐतिहासिक जिम्मेदारी वाले देशों से तेज कार्रवाई की अपेक्षा है।

विश्लेषण और आगे की राह

भारत के लिए उपयोगी नीति-पाठ कटौती और अनुकूलन को प्रतिस्पर्धी खर्च न मानना है। स्वच्छ ऊर्जा की व्यवस्था भी गर्मी, बाढ़ और जल-संकट से सुरक्षित होनी चाहिए। शहरों में छाया और हरित आवरण स्वास्थ्य तथा ऊर्जा माँग दोनों में मदद कर सकते हैं, पर स्थानीय जल और पारिस्थितिकी का ध्यान रहे। कृषि और स्वास्थ्य प्रणालियों की योजनाएँ बदलते जोखिमों के अनुसार ढलें। कार्बन निष्कासन परियोजनाओं में वास्तविक हटाव, लंबे भंडारण, भूमि-अधिकार और पारिस्थितिक असर का मूल्यांकन हो। केवल लगाए गए पौधों की संख्या को स्थायी कार्बन निष्कासन न समझें।

अवधारणा में अंतर

उत्सर्जन में कटौती, शुद्ध-शून्य और शुद्ध ऋणात्मक उत्सर्जन अलग हैं। शुद्ध-शून्य में शेष उत्सर्जन और निष्कासन संतुलित होते हैं; शुद्ध ऋणात्मक में निष्कासन अधिक होता है। इनमें से कोई शब्द अनुकूलन या हानि-क्षति की जिम्मेदारी समाप्त नहीं करता।

मेंस दृष्टि

उत्तर में तापमान की ऊँचाई, अवधि, अनुकूलन की सीमा और न्याय को जोड़ें। काल्पनिक निश्चित वापसी-तारीख या अपरिहार्य स्थानीय आपदा का दावा न करें।

UPSC CSE Mains शैली: मौलिक अभ्यास प्रश्न

जलवायु ओवरशूट को केवल तापमान सीमा पार करने की घटना मानना अधूरा है। इसकी अवधि, चोटी, अनुकूलन तथा कार्बन निष्कासन की सीमाओं के संदर्भ में चर्चा कीजिए।

(उत्तर 150 शब्दों में दीजिए) | 10 अंक

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: जलवायु ओवरशूट को तय तापमान सीमा से ऊपर जाने के संदर्भ में परिभाषित करें; उसके प्रभाव को चोटी की ऊँचाई और ऊपर बिताई अवधि दोनों से जोड़ें।

मुख्य भाग में: अधिक चोटी और लंबी अवधि से गंभीर तथा अपरिवर्तनीय बदलावों के जोखिम समझाएँ। उत्सर्जन-कटौती, स्वास्थ्य-पानी-कृषि के अनुकूलन और टिकाऊ कार्बन निष्कासन की भूमिकाएँ साथ रखें। निष्कासन की भूमि, पानी, ऊर्जा, लागत और सामाजिक सीमाएँ हैं; उसे आज की कटौती का विकल्प न बनाएँ। शुद्ध-शून्य और शुद्ध ऋणात्मक उत्सर्जन का अंतर तथा अधिक जोखिम झेलते समुदायों की जरूरतें समझाएँ।

निष्कर्ष में: कटौती और अनुकूलन में अभी निवेश, निष्कासन में वास्तविक हटाव तथा लंबे भंडारण की जाँच और न्यायपूर्ण वित्त-तकनीक सहयोग सुझाएँ। सीमा पार होने को प्रयास छोड़ने का कारण न बनाएँ; निश्चित वापसी-तारीख या हर स्थान पर अपरिहार्य आपदा का दावा न करें।

स्रोत

- 2 सितंबर: रिपोर्ट की आधिकारिक घोषणा और मुख्य निष्कर्ष
- UNEP: Limiting Overshoot रिपोर्ट का परिचय
- रिपोर्ट और कार्यकारी सार: शोध संस्थान का अभिलेख

याद रखें: सीमा पार होने का जोखिम कार्रवाई घटाने नहीं, उसकी गति और न्याय बढ़ाने का कारण है।